तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय

''विवेच्य कहानियों में शिक्षा जगत का व्यक्त यथार्थ''

अनुक्रमणिका

3.1 छात्रों से संबंधित व्यक्त यथार्थ

3.1.1 राजनीति का शिकार छात्र

3.1.2 मानसिक द्वंद्व का शिकार हुए छात्र

3.1.3 व्यसनी छात्र

3.1.4 विद्रोही छात्र

3.1.5 स्वतंत्र विचारों वाले छात्र

3.1.6 गुंडागर्दी करने वाले छात्र

3.1.7 विनम्र छात्र

3.1.8 बाहरी चमक-दमक की ओर आकर्षित छात्र

3.1.9 आदर्श छात्र

निष्कर्ष

3.2 अध्यापकों से संबंधित व्यक्त यथार्थ

3.2.1 व्यसनी अध्यापक

3.2.2 अन्याय सहन करने वाले अध्यापक

3.2.3 अनीति से समझौता करने वाले अध्यापक

3.2.4 अध्यापन कार्य में असफल अध्यापक

3.2.5 लाचार अध्यापक

3.2.6 अध्यापन को गंधा पेशा मानने वाला अध्यापक

3.2.7 पुस्तकें तथा पुस्तकालय के उपयोग को न जाननेवाला अध्यापक

3.2.8 भ्रष्टाचारी अध्यापक

3.2.9 घमंडी अध्यापक

3.2.10 अप्रशिक्षित अध्यापक

3.2.11 कथनी और करनी में अंतर रखनेवाला अध्यापक

3.2.12 पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ न पढ़ने वाला अध्यापक

3.2.13 विद्रोही अध्यापक

3.2.14 कर्तव्यदक्ष अध्यापक

3.2.15 संवेदनशीन अध्यापक

निष्कर्ष

3.3 मुख्याध्यापक एवं प्राचार्यों से संबंधित व्यक्त यथार्थ

3.3.1 राजनीति में माहिर प्राचार्य

3.3.2 भ्रष्टाचारी प्राचार्य

3.3.3 संपत्ति प्रेमी प्राचार्य

3.3.4 संवेदनहीन प्राचार्य

3.3.5 तानाशाह प्राचार्य

3.3.6 जातीयवादी प्राचार्य

3.3.7 निंदक प्राचार्य

3.3.8 कमजोर प्राचार्य

3.3.9 अध्यापकों को निरूत्साह करनेवाला प्राचार्य

3.3.10 अध्यापकों की पदोन्नति में रूकावट डालनेवाला प्राचार्य

3.3.11 चापलूस प्राचार्य

निष्कर्ष

3.4 कुलपति से संबंधित व्यक्त यथार्थ

3.4.1 विवेकहीन कुलपति

3.4.2 राजनीतिज्ञ कुलपति

3.4.3 अध्यापकों की सहायता करनेवाला कुलपति

निष्कर्ष

3.5 कर्मचारियों से संबंधित व्यक्त यथार्थ

3.5.1 कामचोर कर्मचारी

3.5.2 लाचार कर्मचारी

3.5.3 कमीशन खानेवाला कर्मचारी

3.5.4 स्वाभिमानी कर्मचारी

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय

''विवेच्य कहानियों में शिक्षा जगत का व्यक्त यथार्थ''

प्रस्तावना :

अध्याय दो में भारतीय विद्वानों ने मुख्यत: बालक के चरित्र-निर्माण के साथ-साथ उसके बहुमुखी विकास पर अधिक बल दिया है । अत: हम प्रस्तुत अध्याय में उक्त आदर्श के परिप्रेक्ष्य में विवेच्य कहानियों में चित्रित छात्र, अध्यापक, मुख्याध्यापक एवं प्राचार्य, कुलपति और कर्मचारियों के संबंध में यथार्थ का विवेचन करेंगे । यह विवेचन इस प्रकार है -

3.1 छात्रों से संबंधित व्यक्त यथार्थ :

प्राचीन काल की शिक्षा-प्रणाली अध्यापक केंद्रित थी किंतु आज की शिक्षा प्रणाली विद्यार्थी केंद्रित है । विद्यार्थी शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग है । उसके बिना शिक्षा-व्यवस्था अधूरी है । आज की शिक्षा-व्यवस्था विद्यार्थी केंद्रित होने के कारण समाज उससे आदर्श छात्रों की अपेक्षा रखता है । अत: आदर्श छात्रों के संदर्भ में कहा जा सकता है कि ''य: पढ़ति, लिखति, पश्चति, परिपृच्छति पंडितानुपाश्रयति । तस्य दिवाकर किरणै : नलिनीदलमिव विकस्यते बुद्धि: ।'' [1] अर्थात जो पढ़ता है, लिखता है, देखता (निरीक्षण करता) है, प्रश्न पूछता है, पंडितों (विद्वानों) के पास आता-जाता है, उसकी बुद्धि उसी प्रकार विकसित हो जाती है जिस प्रकार सूर्य की किरणों से कमलिनी । संक्षेप में आदर्श छात्रों में जिज्ञासा होनी चाहिए । जिज्ञासा के साथ-साथ संयम, अध्यापकों के प्रति आदर की भावना मृदुभाषी, स्वस्थ शरीर आदि गुणों का भी होना आवश्यक है । विवेच्य कहानियों में छात्रों से संबंधित व्यक्त यथार्थ इस प्रकार है -

3.1.1 राजनीति का शिकार छात्र :

भ्रष्ट राजनीति शिक्षा-व्यवस्था में प्रवेश कर चुकी है । इसके जाल में विद्यार्थी फसे हुए नजर आते हैं । 'परथम श्रेणी सबको दो' कहानी में छात्र नेता सदा प्रथम सिंह राजनीति का शिकार बना है । सदा प्रथम सिंह तथा अन्य तीन छात्रों को एम. ए. में प्रथम श्रेणी न मिलने के कारण वह प्रथम श्रेणी पाने के लिए आंदोलन करता है । दो बार अन्य छात्रों का सहयोग न मिलने के कारण आंदोलन असफल होता है । एक दिन सदा प्रथम सिंह अकेला उपकुलपति से जाकर मिलता है । उपकुलपति पक्का राजनीतिज्ञ होने के कारण वह अन्य चार लड़कों को प्रथम श्रेणी से हटाकर इन चारों को प्रथम श्रेणी देना चाहता है । उपकुलपति आंदोलन तीव्र न देखकर सदा प्रथम सिंह को सुझाव देता है कि ''... यह विश्वविद्यालय है, यहाँ चार बराबर चार नहीं

---

1. (संपा) माधव प्रसाद गोयनका : गीता मंदिर पत्रिका (मासिक पत्रिका, डिसेंबर १९९७), पृ. 3

चलेगा । आन्दोलन जबर्दस्त होना चाहिए, तभी कुछ हो सकता है ।''[2] इस तरह सदाप्रथम सिंह उपकुलपति के सुझाव से आंदोलन तीव्र कर प्रथम श्रेणी पा लेता है ।

'संदर्भ' कहानी में विभागाध्यक्ष श्री बत्रा की राजनीति के शिकार विभाग के कुछ छात्र बने हुए हैं । विभागाध्यक्ष श्री बत्रा प्रोफेसर धीरेंद्र के स्थान पर अपने किसी छात्र की नियुक्ति करना चाहता था किंतु वह नियुक्ति नहीं कर पाता । प्रो. बत्रा धीरेंद्र को किसी प्रकार का सहयोग नहीं देता । प्रो. धीरेंद्र उसके लिए एक चुनौती थी । प्रोफेसर बत्रा प्रोफेसर धीरेंद्र को निकम्मा असफल सिद्ध कर विभाग से बाहर फेंकने की कोशिश करता है । छात्र बत्रा के इशारे पर धीरेंद्र को तंग करने में कोई कसर नहीं छोड़ते । प्रोफेसर धीरेंद्र कहता है कि ''इस सब में उनका सहयोग देनेवाली कौरव-सेना उनके इशारों की प्रतीक्षा करती थी ।''[3]

'मदारी' कहानी में पारसनाथ प्रिंसिपल की राजनीति का शिकार बना हुआ है । वह प्रिंसिपल के प्रत्येक गलत निर्णय का विरोध करता है । महाविद्यालय के छात्र पारसनाथ को ही युनियन का सेक्रेटरी बनाना चाहते हैं । पारसनाथ का प्रिंसिपल के विरूद्ध खड़े रहना और युनियन का सेक्रेटरी बनना प्रिंसिपल और वीरेंद्र दोनों को खटकता है । पारसनाथ ग्रंथालय के कॉशन मनी के संदर्भ में आंदोलन छेड़ता है । प्रिंसिपल वीरेंद्र को इस आंदोलन को ध्वस्त करने के संकेत देते हुए कहता है - ''ध्यान रखना, तोड़-फोड़ का काम लाइब्रेरी के बरामदे वाले सेक्शन तक सीमित रहे कालेज का वास्तव में कोई नुकसान न होने पाये ।''[4] इस प्रकार वीरेंद्र प्रिंसिपल के इशारे पर चलकर पारसनाथ के आंदोलन को ध्वस्त कर देता है । अर्थात प्रिंसिपल वीरेंद्र के कंधे पर बंदूक रखकर पारसनाथ को निशाना बनाता है । वह अपने रास्ते में रूकावट बने पारसनाथ को वीरेंद्र के माध्यम से दूर करता है ।

3.1.2 मानसिक द्वंद्व के शिकार हुए छात्र :

फ्रायड के मतानुसार ''प्रत्येक व्यक्ति अच्छी और बुरी भावनाओं के बीच एक युद्ध का मैदान है ।''[5] 'कोलाहल' कहानी का छात्र नेता दिवाकर मानसिक द्वंद्व में फसा हुआ है । वह छात्रों की माँगें लेकर विश्वविद्यालय के सिंडिकेट रूम में पहुँचता है । वह सिंडिकेट रूम में धमकी देकर अपनी माँगें स्वीकार करवाता है । दिवाकर को धमकी देने के बाद ऐसा लगता है कि उसने प्रोफेसर प्रभाकर के मुख पर तमाचा मारा है । उसके मन में अनेक प्रश्न उठते हैं किंतु वह निश्चित नहीं कर पाता कि यह गर्व है या ग्लानि । कहानीकार कहता है - ''दिवाकर प्राय: ऐसे ही किसी द्वंद्व से घिर जाता है - कोई फैसला नहीं कर पाता तो उस द्वंद्व को ही नकार

---

2. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 96
3. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 121
4. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 118
5. डा. लवनिया एम. एम. एवं जैन शशी के - भारत में सामाजिक समस्याएँ, पृ. 311

जाता है ।''[6] अर्थात दिवाकर अच्छी और बुरी भावनाओं में फँस जाता है । उसपर बुरी भावना हावी होती है और पथ - भ्रष्ट करती है ।

'दिशाहीन' कहानी में हरिओम मानसिक द्वंद्व का शिकार बना है । हरिओम अपने गाँव से शहर पढ़ने आता है । वह एक ओर 'सादा जीवन उच्च विचार' सिद्धांत से घिरा हुआ है तो दूसरी ओर उसे शहरी लड़कों की चमक-दमक भी आकर्षित करती है । शहरी लड़कों की चमक-दमक ही उसकी मानसिक असंतुलन का कारण है । वह सही और गलत के बीच फँसने के कारण योग्य निर्णय नहीं कर पाता । उसका एक मन कहता है ''... इन्हीं लड़कों की संस्कृति अपनानी होगी - इन्हीं की तरह अंग्रेजी बोलूंगा, चलना-फिरना, तौर-तरीके, सभी अपनाने होंगे ... उसे ही अपनाना होगा - ''[7] तो दुसरा मन कहता है ''... लेकिन तुमने अपने जीवन के लिए जो कुछ आदर्श माना था उसे तो नकारना होगा - यह तुम्हारे आत्म-सम्मान की कितनी बड़ी हार होगी... नहीं - नहीं - नहीं ... ''[8] इन्हीं विचारों के कारण उसके मन में अपने प्रति हीन भावना पैदा होती है । परिणामत: वह दूसरी बार उठी आवाज का गला घोट देता है और शहरी लड़कों की चमक-दमक को ही अपनाता है ।

3.1.3 व्यसनी छात्र :

आधुनिक युग में व्यसन फैशन व स्वागत - सत्कार का साधन बन गया है । अधिकांश छात्र नशीलें पदार्थों का सेवन करते नजर आते हैं । मानसिक अंतर्विरोध, जिज्ञासा, मंगलकारी अवसरों एवं परंपरागत आयोजनों पर समाजद्वारा स्वीकृति आदि नशावृत्ति के कारण हैं । 'दिशाहीन' कहानी में 'हरिओम' शहरी लड़कों की चमक-दमक से आकर्षित होकर व्यसनी बनता है । एक दिन होटल में हरिओम से उसका मित्र कहता है ''अबे बियर है बियर - व्हिस्की या रम नहीं - इसे बच्चे भी पीते हैं । बी. ई. के बाद फारेन जायेगा तो पानी की जगह यही मिलेगी -''[9]

'स्कूलगाथा' कहानी में भी आठवीं कक्षा के छात्र किसना और तेजू व्यसनी है । वे दोनों रात को नौटंकी देखने जाते समय बीड़ियाँ पीते हैं । ''किसना की जेब में पैसे हैं । तेजू की जेब में बीड़ियाँ हैं । ... बावडी के पास ठहरकर दोनों बीड़ी पीते है ।''[10] 'इसी शहर में' कहानी में एक छात्र अपने मित्र से पूछता है ''सिगरेट है ? ... बाहर का माल है रे यह तो ? कहाँ से झाडा ?''[11] अत: छात्रों का व्यसनी होना अभिभावकों के लिए चिंता का विषय बन गया है । आज-कल अधिकतर शहरी विद्यालयों में अवैध रूप से नशीलें पदार्थों का सेवन हो रहा है । समाज के लिए छात्रों का व्यसनी बनना चिंता का विषय बन गया है ।

---

6. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 62
7. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 177
8. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 177
9. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 188
10. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 89
11. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 154

3.1.4 विद्रोही छात्र :

युवकों का एक महत्त्वपूर्ण गुण विद्रोह है । 'मदारी' कहानी का पारसनाथ विद्रोही है । प्रिंसिपल प्रयोगात्मक विषय वाले छात्रों से प्रत्येक वर्ष पाँच रूपये की वसूली करता था । वह यह रकम प्रॅक्टीकल परीक्षा के लिए बाहर से आनेवाले परीक्षकों पर खर्च करता था । परसनाथ इस परिपाटी का विरोध करता है । वह प्रिंसिपल को एसोसिएशन तथा प्रॅक्टीकल फी के एकाउंट से परीक्षकों पर खर्च करने का सुझाव देता है । वह प्रयोगात्मक विषयवाले छात्रों से राय-मशवरा कर पाँच रूपये न देने का निर्णय भी करता है । प्रिंसिपल उसे इन एकाउंट से पैसे खर्च करने में दिक्कत बताता है । पारसनाथ प्रिंसिपल से कहता है "तब तो सर, माफ कीजिएगा, दिक्कत ही दिक्कत है ! हम पाँच रूपये नहीं दे सकते ! ... इस बात के लिए एक पैसा भी नही ! ... ठी है सर देखा जायेगा ... नमस्ते ..."[12] पारसनाथ के इस मंतव्य से स्पष्ट होता है कि वह योग्य और निड़र छात्र नेता है । अत: आज ऐसे ही छात्र नेताओं की आवश्यकता है ।

'संदर्भ' कहानी की शुभ्रा भी विद्रोही है । विभागाध्यक्ष श्री बत्रा के कुछ छात्र प्रो. धीरेंद्र को कक्षा में पढ़ाने ही नहीं देते । प्रत्येक व्याख्यान में संदर्भहीन तथा अन्य रूकावटें डालकर व्याख्यान में बाधा डालते हैं । शुभ्रा प्रो. धीरेंद्र का साथ देती है । वह इन छात्रों का विरोध करने के लिए अनशन शुरू करती है । उसकी माँग है कि "... प्रोफेसर धीरेंद्र को शांत रूप से अध्यापन करने देने का वचन जब तक पूरी एम. ए. कक्षा नहीं देगी, वह अपना व्रत नहीं तोड़ेगी .." [13] शुभ्रा की विशेषता यह है कि वह लड़की होते हुए भी प्रो. धीरेंद्र का अंत तक साथ देती है । वह अन्य छात्र-छात्राओं के लिए आदर्श भी है । अत: पारसनाथ और शुभ्रा चरित्र - संपन्न होने के कारण ही अनीति का स्पष्ट विरोध करते हैं ।

3.1.5 स्वतंत्र विचारों वाले छात्र :

शिक्षा का उद्देश्य ही यह है कि प्रत्येक विद्यार्थी स्वतंत्र विचार करना सीखें । शिक्षा के इस उद्देश्य की सफलता 'संदर्भ' कहानी में दिखाई देती है । 'संदर्भ' कहानी की शुभ्रा स्वतंत्र विचारों वाली है । वह किसी के दबाव में आकर प्रो. धीरेंद्र का साथ नहीं देती । वह अपने स्वतंत्र विचारों के कारण ही अनशन शुरू करती है । वह प्रो. धीरेंद्र से कहती है "सर हम लोग अभी जाकर हैड और वी. सी. से मिल रहे हैं ... इस तरह से चलना कठिन होगा ..."[14] अर्थात प्रो. धीरेंद्र के व्याख्यान में बाधा डालनेवालों के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए वह किसी से सलाह-मशवरा नहीं लेती । शंकर दयाल शर्मा कहते हैं "यह हमारे देश के हर एक विद्यार्थी और नौजवान का कर्तव्य है कि वे अपनी शक्ति को रचनात्मक कार्यें में लगाए । ... वे केवल अपने ही हित और विकास के बारे में न सोचे बल्कि, इसके साथ-साथ दूसरों के हित और विकास के बारे में सोचे ।" [15]

---

12. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 113
13. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 124
14. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 123
15. डॉ. शंकर दयाल शर्मा - भारतीयता के आधार, पृ. 48

'कोलाहल' कहानी में मिस रीता भी स्वतंत्र विचारों वाली है । ''तुम बार-बार एक ही बात क्यों पूछते हो ? मैंने कहा न, मैं आजाद रहना चाहती हूँ और आजादी के लिए हवा में उड़ने से अच्छा दूसरा रास्ता नहीं ।''[16] अर्थात मिस रीता एयर होस्टेस बनना चाहती है । परंपरागत विचारों को त्यागने वाली छात्राओं का प्रतिनिधित्व मिस रीता और शुभ्रा कर रही है । आज भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्त्रियों का वर्चस्व दिखाई दे रहा है । जैसे निरूपमा राय, सुषमा स्वराज, चोकिला अय्यर, सोनिया गांधी, किरण बेदी आदि स्त्रियाँ भारत के उज्ज्वल भविष्य में सक्रीय योगदान दे रही हैं ।

3.1.6 गुंडागर्दी करने वाले छात्र :

गुंडागर्दी के कई कारणों में से एक प्रमुख कारण बेकारी है । छात्रो में बेकारी के कारण छिनने की प्रवृत्ति पनपती है । बेकारी के कारण समाज के विघटन का भी डर रहता है । 'इसी शहर में' कहानी में एक छात्र अपने उस्ताद से कहता है ''... अपन तो उस्ताद वो दाँव मारता है कि बस कुछ मत पूछो । एक घुड़की मारी नहीं कि बेटे ने माल बाहर निकाल दिया ।''[17] बेकार और पढ़े लिखे छात्रों की माँग अंडरवर्ल्ड वाले भी कर रहे हैं । सुनील मलहोत्रा के अनुसार ''... संचार के आधुनिकीकरण के बाद अब सरगना और आतंकवादी संगठन यह मानने लगे हैं कि किसी बड़ी साजिश को अंजाम सिर्फ पढ़े लिखे युवक ही दे सकते हैं ।'' [18] इसका सबसे ताजा उदाहरण दिल्ली में गिरफ्तार किए गए प्रोफेसर गिलानी और मोहम्मद अफरोज है ।

3.1.7 विनम्र छात्र :

विनम्र विद्यार्थी शिक्षा की बहुत बड़ी उपलब्धि है । डॉ. सुरेंद्रकुमार जैन 'भारती' के अनुसार ''विज्ञान के इस युग में नित-नवीन परिवर्तनों के बीच यदि कोई शाश्वत है तो वह है विनम्रता ।''[19] 'राख हो चुका समय' कहानी की छात्रा मणि विनम्र है । शोध-निर्देशक डॉ दत्त की छात्रा तरला को मणि के प्रयत्नों से नौकरी मिलती है । डॉ. दत्त तरला को मिली नौकरी का श्रेय मणि को देता है । मणि इस श्रेय को नकारते हुए कहती है ''नहीं गुरूजी, इसमें मेरा कुछ नहीं है । ... पर अच्छा काम करने का प्रोत्साहन किसने दिया. सब कुछ सिखाया - पढ़ाया किसने ? और अब इस स्थान पर जमाया किसने ?'' [20] मणि अपने को इस काबिल बनाने का श्रेय डॉ. दत्त को ही देती है । आज मणि जैसे विनम्र छात्रों का अभाव है । गुरू-शिष्य के मधुर संबंधों में अंतर दिखाई दे रहा है । छात्रों की अपने गुरू के प्रति आस्था कम होती जा रही है । यह आधुनिक शिक्षा का दोष ही माना जाता है ।

---

16. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 60
17. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 154
18. (संपा) विश्वनाथ नचदेव - दै. नवभारत टाइम्स, बुधवार दि. 9 जनवरी 2002, पृ. 01
19. (संपा) विनोद कुमार मिश्र - अणुव्रत (पाक्षिक) जनवरी 2002, पृ. 11
20. (संपा.) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ.130

3.1.8 बाहरी चमक-दमक की ओर आकर्षित छात्र :

ग्रामीण छात्रों का शहरी ताम-झाम या चमक-दमक की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक है । अनुकरण मनुष्य का स्थायी गुण है । 'दीशाहीन' कहानी का छात्र हरिओम भी शहरी लड़कों की बाहरी चमक-दमक की ओर आकर्षित होता है । वह उनका अनुकरण करना चाहता है । उसका ऐसा मानना है कि बाह्य चमक-दमक के कारण ही आत्मविश्वास पैदा होता है । इसलिए वह समित के सुझाव के अनुसार बाजार से "... एक रेडिमेड टी शर्ट ... एक पैण्ट तथा शर्ट ... रोजमर्रा के जरूरत की कुछ चीजें ... साबुन की जगह शेविंग क्रीम, एक कायदे का शेविंग - सेट, टेल्कम पाउडर और सेण्ट स्प्रे ..." [21] खरीद ले आता है । डॉ. लवनिया एम. एम. और जैन शशी के. के अनुसार "उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थी नगरीय समुदाय में आसानी से समायोजन नहीं कर पाते ।"[22] हरीओम भी शहर में आसानी से समायोजन नहीं कर पाता । इसलिए वह बाजार से कुछ चीजें खरीद ले आता है । वह इन चीजों का उपयोग करने पर अपने आपको हल्का महसूस करता है । अर्थात आज के आधुनिक जीवन में इन चीजों का उपयोग आवश्यक हो गया है । इन चीजों का उपयोग न करने वालों को हेय नजर से देखा जाता है ।

आजकल छात्रों की उद्दंडता को लेकर सभी अध्यापक चिंतित दिखाई देते हैं । उद्दंडता एक ऐसा दुर्गुण है जो सभी सद्गुणों पर पानी फेर डालता है । 'संदर्भ' कहानी में विभागाध्यक्ष श्री बत्रा के आदेशानुसार कुछ छात्र प्रो. धीरेंद्र के व्याख्यान में बाधा डालते हैं । प्रो. धीरेंद्र छात्रों की इस व्यवहार से तंग आकर एक छात्र से कक्षा से बाहर जाने को कहता है । छात्र प्रो. धीरेंद्र से उद्दंडता से कहता है "कक्षा से बाहर जाने के लिए वह फीस नहीं देता ।" [23] प्रो. धीरेंद्र जानता है कि यह सब सुनियोजित है इसलिए वह स्थिति को न बिगाड़ते हुए स्वयं ही बाहर चला जाता है ।

'इसी शहर में' कहानी के छात्र भी उद्दंड ही है । एक छात्र अपनी माँगें प्रिंसिपल से बताते हुए कहता है - "एक पर्चा लिजिए, घर जाकर पढ़ लीजिएगा । ... अगर माँगें पूरी न हुई तो कॉलेज का सत्यानाश हो जाएगा ।" [24] इन दो उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि छात्रों के मन में अध्यापकों के प्रति आस्था नहीं रही । वे अध्यापकों के साथ किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए इतना भी नहीं जानते ।

3.1.9 आदर्श छात्र :

विद्यार्थियों में आज्ञापालन, शारीरिक एवं नैतिक साहस, सहनशीलता, प्रतिद्वंद्विता एवं आत्म नियंत्रण आदि गुण होने चाहिए । श्रीमती एनी बेसेंट आदर्श विद्यार्थियों के संबंध में कहती हैं "विद्यार्थियों के लिए ब्रह्मचारी होना आवश्यक है । ब्रह्मचारी अथवा आदर्श विद्यार्थियों के गुणों का लक्षण उनकी

---

21 . (संपा.) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ.184
22. डा. लवनिया एम. एम. एवं जैन शशी के. - भारत में सामाजिक समस्याँए, पृ. 215
23. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 121
24. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 150

सरलता है । इसके बिना अन्य गुण संभव नहीं हैं ।'' [25] इस युग में छात्रों से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन होना संभव नहीं है । आदर्श विद्यार्थियों के लिए सरलता आवश्यक ही है । 'संदर्भ' कहानी की शुभ्रा आदर्श छात्रा है । वह स्पष्टभाषिणी, निड़र, अनीति का विरोध करनेवाली, जिज्ञासू और पढ़ाकू छात्रा है । साथ ही उसमें सरलता भी कूट-कूट कर भरी है । उसके बारे में प्रो. धीरेंद्र कहता है ''साहित्य उसके रक्त में रचापचा था, उसकी जिज्ञासाएँ अगाध थीं, उतना ही विस्तृत उसका अध्ययन भी था । न जाने कितना कुछ उसे कण्टस्थ था । ज्ञान और कर्म की वह उर्जापुंज लगी थी ... और मन ही मन मैंने उसे नमन किया था ।''[26]

'मदारी' कहानी का पारसनाथ भी आदर्श छात्र है । वह दुबला पतला किंतु कसी देह वाला लड़का है । वह हमेशा भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद पर बातें करता है । खेल कूद में हिस्सा लेकर पुरस्कार प्राप्त करता है । पढ़ाई में भी वह ठीक है । ''गलत बातों और चीजों के प्रति उसकी मुद्रा अक्सर विरोध लिए होती ...''[27] इस प्रकार शुभ्रा और पारसनाथ आज के छात्रों के मार्गदर्शक या आदर्श हो सकते हैं ।

प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक जीवन आदर्श होता है । जॉन देवे के शब्दों में ''शिक्षा वह प्रयोगशाला है, जिस में दार्शनिक विचारों को परीक्षित एवं मूर्त रूप प्रदान किया जाता है ।''[28] 'कोलाहल' कहानी का हरजीत आदर्श है । वह छात्र नेता दिवाकर और उसके साथियों की गलत माँगों का और आंदोलन का विरोध करता है । वह दिवाकर और उसके साथियों को संबोधित करते हुए कहता है - ''... आप जिंदगी को गलत समझ रहे हैं । एक मिनट रुककर सोचिए कि आप क्या कर रहे हैं, क्यों कर रहे हैं ! ... किसी भी तरफ चल पड़ना 'प्रोग्रेस' नहीं है, 'प्राग्रेस' के लिए राह और मंजिल होनी चाहिए, जरा सोचिए ।''[29]

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि विवेच्य कहानियों में आदर्श छात्रों का चित्रण बहुत कम हुआ है । अधिकतर कहानीकारों ने छात्रों को राजनीति का शिकार, मानसिक द्वंद्व का शिकार, उद्दंड, व्यसनी, गुंडागर्दी करनेवाले ही चित्रित किया है ।

3.2 अध्यापकों से संबंधित व्यक्त यथार्थ :

प्रत्येक युग में अध्यापक का अनन्य साधारण महत्त्व रहा है । भारत में गुरू-शिष्यों की एक आदर्श परंपरा रही है । वे दोनों एक दूसरे के प्रति समर्पित होते थे । प्राचीन काल से आज तक सामाजिक परिवर्तनों में अध्यापकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है । एन. आर. स्वरूप सक्सेना के शब्दों में '' ... बिना शिक्षक के सामाजिक परिवर्तन कोरी कल्पना मात्र ही है ।'' [30] प्राचीन काल में एक ही गुरू के पास सारा ज्ञान मिलता था ।

---

25. डॉ. इन्द्रा ग्रोवर - संसार के महान शिक्षाशास्त्री, पृ. 181
26. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 124
27. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 112
28. गुरसरनदास त्यागी - शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, पृ. 149
29. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 60
30. एन.आर स्वरूप सक्सैना. - शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार, पृ. 217

अत: गुरू ही शिष्यों के लिए सर्वस्थ थे । आज ज्ञान का विस्फोट हुआ है इसलिए एक ही अध्यापक छात्रों को संपूर्ण जानकारी या ज्ञान नहीं दे सकता । आज विविध विषयों के अध्यापक छात्रों को विविध ज्ञान दे रहे हैं । आज के अध्यापक छात्रों के सर्वस्व न रहकर केवल मार्गदर्शक या सहायक रहे हैं । श्री अरविंद घोष जी के शब्दों में ''अध्यापक निर्देशक या स्वामी नहीं है, वह सहायक और पथ-प्रदर्शक है । उसका कार्य सुझाव देना है, न कि ज्ञान लादना ।'' [31] अध्यापक सहायक हो या पथप्रदर्शक उनका महत्त्व भविष्य में भी अनन्य साधारण रहेगा इसमें संदेह नहीं ।

विवेच्य कहानियों में चित्रित अध्यापक वर्ग के यथार्थ को निम्नांकित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है ।

3.2.1 व्यसनी अध्यापक :

यह सच्चाई है कि अध्यापक भी व्यसन के चंगुल में फसे हुए हैं । ऐसे कई अध्यापक हैं जो विद्यालय के परिसर में तथा अध्यापक कक्ष में व्यसन करते हमें दिखाई देते हैं । 'पुस्तकालय प्रसंग' कहानी का अध्यापक निगम अध्यापक कक्ष में सिगरेट पीता दिखाई देता है । कहानीकार कहता है ''निगम साहब चिरस्माधिस्त योगी - से विचारों में लीन सिगरेट पी रहे थे ।'' [32] 'स्कूलगाथा' कहानी का ड्रिल मास्टर शराबी है । कहानीकार के शब्दों में ''ड्रिल मास्टर की जेब में अध्दा है । अध्दे में दारू है । दारू में क्या है - ड्रिल मास्टर नहीं जानता ।''[33] अर्थात आज अध्यापकों में पान-तमाखू, बीड़ी - सिगरेट यहाँ तक की शराब पीना भी सामान्य बात हो गयी है । अध्यापकों का व्यसनी होना छात्रों के भविष्य की दृष्टि से घातक है । अत: यह उनका चारित्रिक दोष ही है । पुरुषोत्तम दास टंडन के अनुसार ''यदि आप चरित्रवान रहेंगे तो संसार आपके सामने सिर झुकायेगा और तभी आप इस सड़े-गले समाज का पुनरूत्थान कर सकेंगे ।'' [34] अत: निगम साहब और ड्रिल मास्टर जैसे चरित्रहीन अध्यापकों से सड़े-गले समाज के पुनरुत्थान की आशा नहीं की जा सकती ।

3.2.2 अन्याय सहन करने वाले अध्यापक :

युनानी दार्शनिक अरस्तु कहता है ''सिर्फ वही स्वतंत्र है जो शिक्षित है ।'' [35] अरस्तू के विचारों के विपरित अध्यापक 'प्रिंसिपल' कहानी में दिखाई देते हैं । प्रिंसिपल की दहशत के कारण उनमें स्थित विद्रोह की भावना नष्ट हो चुकी है । वे कहते हैं ''हम सोच ही सकते थे । कर कुछ न सकते थे । मन्त्री का पार्ट अदा करने का साहस हममें से किसी में न था ।''[36] अर्थात वे प्रिंसिपल के अन्याय को चुपचाप सहन करते हैं । अब प्रश्न यह उठता है कि अगर अध्यापक ही अन्याय को चुपचाप सहन करते हैं तो वे छात्रों के मन में विद्रोह की भावना कैसे जागृत कर सकते हैं ?

---

31. हरिराम जसटा - आधुनिक भारत में शैक्षिक चिंतन, पृ. 55
32. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 18
33. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 89
34 (संपा) प्राध्यापक उपाध्याय 'उदय' - हिंदी गद्य गौरव, पृ. 58
35. (संपा) विनोदकुमार शुक्ल - अणुव्रत (पाक्षिक) दिसंबर 2001, पृ. 21
36. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 27

'उपनिवेश' कहानी में एक ट्रस्टी विद्यालय चला रही है । इस विद्यालय का प्रिंसिपल अनुशासन के नाम पर दहशत फैलाता है । अध्यापकों में दहशत का विरोध करने की क्षमता नहीं है । अध्यापक अशोक वर्मा अपने बहनोई की आकस्मित मृत्यु के कारण स्वीकृत छुट्टी के अतिरिक्त एक दिन विद्यालय में नहीं पहुँच पाता । इसलिए प्रिंसिपल उसे एक सेशन की छुट्टी पर भेज देता है । अशोक वर्मा जानता है कि यह अन्याय है किंतु वह विरोध नहीं कर पाता । ''अशोक कुछ बोलना चाहता था, पर जानता था कुछ कहना व्यर्थ है ।'' [37]

3.2.3 अनीति से समझौता करने वाले अध्यापक :

काका कालेलकर राष्ट्रीय शिक्षक के संदर्भ में कहते हैं ''उत्तम देशभक्ति, अपार त्याग करने की तैयारी और उग्र क्रांतिकारी विचार इतनी ठोस लियाकत पर कोई भी मनुष्य राष्ट्रीय शिक्षक हो सकता है ।''[38] 'ट्यूशन' कहानी का वृद्ध अध्यापक दामोदर नौकरी की शुरूआत से ही अपने जीवन में समझौता करता है । वह अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए अनीति से समझौता करता है । कहानीकार के शब्दों में ''... वह अब तक नौकरी के लिए ही जिन्दा रहा है । हर समय उसे यही भय बना रहा है - कही नौकरी न छूट जाये ... बच्चों का क्या होगा ? इसलिए तो उससे कितने नाजायज काम करवाते जाते रहे और वह हर बार समझौता करता रहा ।''[39]

'वजूद' कहानी का युवा अध्यापक भी अनीति से बार-बार समझौता करता है । अनीति से समझौता करना उसके जीवन का एक हिस्सा बन चुका है । अनीति से समझौता करने के कारण ''.... उसके अंदर का कायर और अधिक सहमा था और उसमें समझौते करने की ताकत पहले से कई गुणा अधिक प्रबल हुई थी ।''[40] काका कालेल्कर जी के उक्त विचारों के विपरित स्थिति आज के अध्यापकों में पयी जाती है । अर्थात उनमें त्याग करने की तैयारी और उग्र क्रांतिकारी विचार न होने के कारण वे अनीति से समझौता करते हैं ।

3.2.4 अध्यापन कार्य में असफल अध्यापक :

सफल तथा योग्य अध्यापक का प्रमाणपत्र स्वयं छात्र ही देते हैं । शिक्षा के प्रति समर्पण भाव ही सफल अध्यापक की निशानी है । 'ट्यूशन' कहानी का वृद्ध अध्यापक दामोदर एक असफल अध्यापक है । आठवीं कक्षा के छात्र मैनेजर से अध्यापक दामोदर की अच्छा न पढ़ाने की शिकायत करते हैं । हेडमास्टर दामोदर से कहता है ''आठवीं कक्षा के छात्रों ने आपकी शिकायत लिखी है मैनेजर को, कि आप अच्छा नहीं पढ़ाते ।'' [41] असफलता के कुछ कारण इस प्रकार है - पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ न पढ़ना, छात्रों के मनोविज्ञान का ज्ञान न

---

37. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 33
38. काका कालेलकर - आत्मचरित्र भाग - 5, पृ. 390
39. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 74
40. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 54
41. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 78

होना, आत्मविश्वास का अभाव आदि । अत: जो अध्यापक इन चीजों को पार करता है वह सफल अध्यापक माना जाता है ।

3.2.5 लाचार अध्यापक

प्रेमचंद जी के शब्दों में ''जिस शख्स को फिक्रेमुआश से आजादी ही नसीब न होगी, वह तालिम की तरफ क्या खाक रजू होगा ?'' [42] यह सच है कि आज के अधिकांश अध्यापक अपनी जीविका की चिंता में ही डुबे हैं । वे अपनी जीविका की चिंता के कारण ही लाचार बने हैं । 'वजूद' कहानी का युवा अध्यापक लाचार है । वह एक प्राथमिक विद्यालय में अध्यापन का कार्य करता है । वह छह दिन बीमार होने के कारण विद्यालय में उपस्थित नहीं रह पाता । मैनेजर उसे विद्यालय में उपस्थित न देखकर नौकरी से निकाल देता है और उसकी जगह अन्य अध्यापक की नियुक्ति करता है । युवा अध्यापक मैनेजर से कहता है ''मेरी हालत पर ध्यान दीजिए साहब ... मैं बहुत गरीब हूँ, मुझे नौकरी चाहिए । मैं वादा करता हूँ, हब कभी गैरहाजिर नहीं होऊँगा ...''[43] इसमें संदेह नहीं कि अगर अध्यापक ही लाचार बनें तो अधिकांश समाज भी लाचार ही बनेगा ।

3.2.6 अध्यापन को गंधा पेशा मानने वाला अध्यापक :

पुष्पलता शर्मा कहती है ''जब से गुरू शब्द का स्थान शिक्षक और अध्यापक ने ले लिया है, गुरू की छवि धूमिल होने लगी है ।''[44] गुरू की छवि धूमिल बनाने में स्वयं अध्यापक ही जिम्मेदार है । 'इतना बड़ा पुल' कहानी का प्रोफेसर राजेशकरण पार्थ से कहता है ''अध्यापन का पेशा बड़ा गन्दा है । आदमी के मन और मस्तिष्क को खोखला कर देता है ।''[45] प्रो. राजेशकरण का वक्तव्य अध्यापकीय पेशे पर एक धब्बा है । ऐसे ही अध्यापकों की संख्या अधिक रही तो शिक्षा का गुड़गोबर होने में तनिक भी देर नहीं लगेगी ।

3.2.7 पुस्तकें तथा पुस्तकालय के उपयोग को न जाननेवाला अध्यापक :

'पुस्तकालय प्रसंग' कहानी का अध्यापक मंगतूराम बावला है । कहानीकार ने प्रो. मंगतूराम के माध्यम से ग्रंथालय का लाभ न उठानेवाले अध्यापकों पर व्यंग्य किया है । निगम साहब के आदेशानुसार प्रो. मंगतूराम ग्रंथालय में चला जाता है । ग्रंथालय में जाने से पहले वह निगम साहब से कहता है ''आपकी आशा को नाथ, मैं विधायक की टोपी के समान शीश पर धारण करता हूँ किंतु इतना और जानने की इच्छा मन में बलवती हो रही है कि मुझे किस कोटि की पुस्तकें लानी चाहिए तथा उनका क्या उपयोग है ।''[46] कहानीकार बताना चाहता है कि ऐसे बहुत से अध्यापक हैं जो अच्छी पुस्तकों का चुनाव भी नहीं कर सकते । वे अच्छी पुस्तकों का चुनाव इसलिए नहीं कर पाते क्योंकि पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ पढ़ते ही नहीं ।

---

42. हरिराम जसटा - आधुनिक भारत में शैक्षिक चिंतन, पृ. 39
43. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 56
44 (संपा) रवींद्र अग्निहोत्री - चिंतन अनुचिंतन, पृ. 17
45. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 142
46. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 12

3.2.8 भ्रष्टाचारी अध्यापक :

भ्रष्टाचार प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है । इससे शिक्षा जगत और अध्यापक भी अछूते नहीं रहे हैं । पवन चौधरी के शब्दों में ''भ्रष्टाचार हिमालय से भी उंची और हवा से भी हल्की एक भारी - भरकम हकीकत है ।''[47] 'अन्धेरे के कैदी' कहानी में अध्यापिका सुनीता भ्रष्टाचारी है । वह एन. सी. सी. की इंचार्ज है । वह एक समारोह के रिफ्रेशमेंट में फलवालों से कमीशन लेती है । प्रिंसिपल कमीशन के संदर्भ में जानती है । वह सुनीता से कहती है ''किसी भी दिन आपके हिसाब की जाँच हो सकती है । रिफ्रेशमेंट में परसेण्टेज के बारे में मुझे मालूम है । ... हिसाब में गड़बड़ी और फलोंवाले की गवाही का मतलब है - बदनामी ।''[48]

3.2.9 घमंडी अध्यापक :

'पुत्र' कहानी में फिजिक्स का प्रोफेसर घमंडी है । उसे अपने ज्ञान पर बहुत गर्व है । उसका मानना है कि इस देश में फिजिक्स को मेरे जितने जानने वाले दो-चार ही लोग है । वह अपने आप को टॉप के लोगों में से एक मानता है । ''... दिल्ली में मेरे स्टेटस का कोई फिजिक्स का प्रोफेसर आपको शायद ही मिले ।''[49] फिजिक्स का एक विभागाध्यक्ष दिल्ली के कालेज में अपने छात्र की नियुक्ति करता है । वह नियुक्त किए गए छात्र के संबंध में कहता है '' ... क्या बताऊँ आपको, मेरे सामने अभी वह छोकरा था । ... फिजिक्स किसे कहते हैं इसकी उसे रत्ती भर भी तमीज नहीं ... ।''[50]

3.2.10 अप्रशिक्षित अध्यापक

प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित अध्यापकों की ही नियुक्ति की जाती है । जैसे इ.B.Ed अथवा D.Ed । लेकिन निजी संस्थाओं में अप्रशिक्षित अध्यापकों की भी नियुक्ति की जाती है । 'वजूद' कहानी का अध्यापक अप्रशिक्षित है । वह एम. ए. पास है । विद्यालय का मैनेजर उसकी शर्मा की सिफारिश के कारण प्राथमिक विद्यालय में नियुक्ति करता है । वह नौकरी के पहले ही दिन बच्चों के नाम जानना चाहता है । वह ठेठ मास्टराना रौब से एक बच्चे से कहता है '' ... ऐ sss ... तुम इधर आओ ...'' [51] उसकी आवाज सुनकर बच्चा रोने लगता है । वह अप्रशिक्षित होने के कारण बच्चों का मनोविज्ञान नहीं जानता । एन. आर. स्वरूप सक्सेना के अनुसार ''यदि शिक्षक कुशल तथा योग्य है तो सब कुछ ठीक है अन्यथा सब व्यर्थ है ।''[52]

---

47. पवन चौधरी - मनमौजी उवाच, पृ. 106
48. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 47
49. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 81
50. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 83
51. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 52
52. एन. आर स्वरूप सक्सैना. - शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार, पृ. 111

3.2.11 कथनी और करनी में अंतर रखनेवाला अध्यापक :

समाज अध्यापकों से यह अपेक्षा रखता है कि उनकी कथनी और करनी में अंतर न हो । 'स्कूलगाथा' कहानी के अध्यापकों में यह अंतर स्पष्ट दिखाई देता है । गाँव में एक नौटंकी आयी है । हेडमास्टर ड्रिल मास्टर के माध्यम से छात्रों को आदेश देता है कि नौटंकी देखने कोई न जाए । यह आदेश अध्यापकों पर भी लागू है । लेकिन नौटंकी देखने स्वयं अध्यापक ही जाते हैं । " तम्बू में नौटंकी है । नौटंकी में शहर की लुगाइयाँ है । ... उनके इर्द-गिर्द लोग हैं । लोगों में स्कूल का ड्रिल मास्टर है । .... भीड़ में हर रोज स्कूल के लड़के हैं । और लड़कों के पीछे या आगे कोई न कोई मास्टर है ।"[५३] जिन अध्यापकों की कथनी और करनी में अंतर होता है वे छात्रों में सम्मान का स्थान नहीं पा सकते ।

3.2.12 पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ न पढ़ने वाला अध्यापक :

आज पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ भी न पढ़ने वाले अध्यापक पाये जाते हैं । अध्यापकों को चाहिए कि वे पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ पढ़ें । उनके पास अपने विषय के साथ - साथ अन्य विषयों की सामान्य जानकारी होनी चाहिए । उन्हें प्रतिदिन समाचार पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ आदि पढ़नी चाहिए । आज के अध्यापक के लिए संगणक का ज्ञान आवश्यक माना गया है । 21 वीं सदी की मान्यता है कि जिसे संगणक का ज्ञान नहीं वह अनपढ़ या निरक्षर है । 'ट्यूशन' कहानी का अध्यापक दामोदर पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ पढ़ता नहीं । उसके व्याख्यान में छात्र रूचि नहीं लेते । हेडमास्टर दामोदर की सफाई खारिज करते हुए कहता है "... आपके पढ़ाने का तरीका बहुत पुराना पड़ गया है । इसी से छात्र तुमसे पढ़ने में रूचि नहीं लेते ... अपने पढ़ाने में कुछ नयापन लाओ । नई - नई पुस्तकें पढ़ो ।"[54] जो अध्यापक आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से परिचित है और जिसकी अपनी विषय पर गहरी पकड़ है उसके व्याख्यान में छात्र रूचि लेते हैं ।

3.2.13 विद्रोही अध्यापक :

'प्रिंसिपल' कहानी का अध्यापक नरपत विद्रोही है । प्रिंसिपल अध्यापकों का मानसिक शोषण करता है । लेकिन कोई भी अध्यापक मानसिक शोषण का विरोध नहीं करता । नरपत प्रिंसिपल के अन्याय को एक सीमा तक सहन करता है । अंत में वह प्रिंसिपल के एक आदेश का उल्लंघन करता है ।

" श्री नरपत !" प्रिंसिपल ने पुकारा

" ...."

" श्री नरपत !" प्रिंसिपल हकलाया ।

नरपत गंम्भीर हो गया । एक नजर प्रिंसिपल पर डालकर उसने निगाहें हमारी ओर फेर लीं । "प्रिंसिपल नारंग !" नरपत का बाजू ऊपर को उठ गया ।

---

53. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 89-90
54. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 78

"मुर्दाबाद !" [55] इस मुर्दाबाद में छात्रों सहित अन्य अध्यापक भी शामिल होते हैं । राबर्ट सचिन्स ने ठीक ही कहा है - "विचारों को दबाने की नीति न तो पहले कभी सफल हुई है न ही भविष्य में कभी होगी । इसका विकल्प है शिक्षा का लम्बा कठिन राजपथ ।"[56]

3.2.14 कर्तव्यदक्ष अध्यापक :

कर्तव्यदक्ष अध्यापक ही कर्तव्यदक्ष पीढ़ियों का निर्माण करते हैं । 'राख हो चुका समय' कहानी में डॉ. दत्त कर्तव्यदक्ष शोध-निर्देशक है । तरला डॉ. दत्त की छात्रा है । उसने डॉ. दत्त के निर्देशन में पीएच्.डी. का प्रबंध प्रस्तुत किया है, केवल साक्षात्कार (मौखिकी) बाकी है । एक संस्था में तरला नौकरी के लिए साक्षात्कार देने आती है । साक्षात्कार समिती में डॉ. दत्त है । श्रीमती दत्त अपने पति से साक्षात्कार में तरला की मदद करने को कहती है । डॉ. दत्त कहता है " ... जानती तो हो, मैं गलत काम नहीं कर सकता । हाँ, अगर मेरा विद्यार्थी साक्षात्कार के दौरान बढ़िया सिध्द होगा तो ले ही लिया जायेगा ।"[57] इस उद्धरण से स्पष्ट होता है कि डॉ. दत्त कर्तव्यदक्ष अध्यापकों का प्रतिनिधित्त्व कर रहा है । डॉ. दत्त कर्तव्यहीन अध्यापकों के लिए आदर्श है ।

3.2.15 संवेदनशील अध्यापक :

अध्यापक संवेदनशील होना अत्यंत अनिवार्य है । संवेदना के कारण ही आपसी संबंध दृढ़ होते हैं । पुष्पा दीवान के शब्दों में "अच्छा शिक्षक वह है जो छात्रों के सुख-दुख में भागीदार हो । उनसे कक्षा में, कक्षा के बाहर व उनके घर पर निकट संपर्क रखता हो । समस्या का उचित समाधान करता हो ।"[58] 'राख हो चुका समय' कहानी का शोध-निर्देशक डॉ. दत्त संवेदनशील है । वह अपने प्रत्येक छात्र के साथ घरेलू संबंध रखता है । डॉ. दत्त पति-पत्नी शोध - छात्रा तरला को अपनी बेटी मानते हैं । डॉ. दत्त पति-पत्नी तरला के पत्र का इंतजार करते हैं । "तरला की ओर से दो पंक्तियों का इन्तजार करते - करते दोनों पति-पत्नी की आँखें पथरा गयी ।"[59] इस उद्धरण से डॉ. दत्त की छात्रों के प्रति आत्मीयता प्रकट होती है । आज डॉ. दत्त जैसे अध्यापकों की कमी महसूस होती है ।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: कहा जाता है कि विवेच्य कहानियों में अधिकांश अध्यापक व्यसनी, अन्याय सहन करनेवाले, भ्रष्टाचारी, अनीति से समझौता करनेवाले, लाचार, अध्यापन कार्य में असफल आदि का चित्रण कहानिकारों ने किया है । बहुत कम कहानिकारों ने उनके गुणों का उद्घाटन किया है । अत: स्पष्ट है कि

---

55. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 28
56. (संपा) विनोद कुमार शुक्ल : अणुव्रत (पाक्षिक) जनवरी, 2002 पृ.25
57. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 129
58. (संपा) रवींद्र अग्निहोत्री - चिंतन अनुचिंतन, पृ. 17
59. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 134

महात्माजी और रविंद्रनाथजी द्वारा बताए गए अध्यापकों के आदर्श के विपरित अधिकांश अध्यापक दिखाई देते हैं ।

3.3 मुख्याध्यापक एवं प्राचार्यों से संबंधित व्यक्त यथार्थ

प्रस्तावना :-

मुख्याध्यापक एवं प्राचार्य विद्यालय में शिक्षा-व्यवस्था के लिए नियुक्त किया गया एक अधिकारी होता है । उनका विद्यालय में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है । इनका संबंध समाज के प्रत्येक घटक के साथ होता है । जैसे - विद्यार्थी, अध्यापक, कर्मचारी, अभिभावक, संस्थापक, राजनीतिज्ञ तथा अन्यान्य संस्थाएँ । कुशल मुख्याध्यापक एवं प्राचार्य ही समाज के अन्यान्य घटकों की सहायता से विद्यालय की प्रगति करता है । चरित्र संपन्न मुख्याध्यापक का प्रभाव संपूर्ण विद्यालय पर पड़ता है । वे समाज और विद्यालय के संबंधों को मजबूत करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं । मुख्याध्यापक एवं प्राचार्य में शैक्षणिक योग्यता, नेतृत्त्व, अध्यापन कौशल, नियोजन क्षमता, निर्णय क्षमता, आत्मविश्वास, अविष्कार कुशलता, सहानुभूति एवं सामाजिक संपर्क आदि गुणों की आवश्यकता होती है ।

उक्त आदर्श के परिप्रेक्ष्य में हम विवेच्य कहानियों में चित्रित मुख्याध्यापक एवं प्राचार्यों से संबंधित व्यक्त यथार्थ का विवेचन करेंगे । यह विवेचन इस प्रकार है -

3.3.1 राजनीति में माहिर प्राचार्य :

राजनीति के बढ़ते प्रभाव से शिक्षा जगत भी बच नहीं पाया है । प्रिंसिपल का संबंध विभिन्न राजनीतिज्ञों से रहता है । अत: वह भी राजनीति से प्रभावित होना स्वाभाविक है । विवेच्य कहानियों में ऐसे प्रिंसिपल या मुख्याध्यापक हैं जो तथाकथित राजनीतिज्ञों से भी अधिक राजनीति में माहिर है । 'प्रिंसिपल' कहानी का प्रिंसिपल नारंग राजनीति में माहिर है । वह हमेशा अध्यापकों और छात्रों पर मानसिक दबाव डालता है । वह राजनीति में माहिर होने के कारण मानसिक दबाव को कम करना भी जानता है । वह कभी - कभी अध्यापकों से कहता है ''आप थक गये हैं । दिन - भर पढ़ाना आसान बात नहीं । बच्चे मस्तिष्क झंझोड़ डालते हैं । मैं आपको और नहीं रोकना चाहता ।''[60] प्रिंसिपल नारंग के इस कथन पर अध्यापक विश्वास ही नहीं रख पाते । उन्हें ऐसा लगता है कि मानो वह घर तक छोड़ने आया ।

'उपनिवेश' कहानी का प्रिंसिपल चक्रवर्ती राजनीति में माहिर है । वह अपना पद संभालते ही अधूरे पड़े कामों को पूर्ण कर सबको प्रभावित कर देता है । वह धीरे-धीरे राजनीति के दाँव पेंच खेलना शुरू करता है । विद्यालय में अपना एक 'इनर सर्किल' बना लेता है । ''स्कूल में शतरंज-सी बिछ चुकी थी । अब मोहरों के

---

60. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 23-24

पिटने की बारी थी ।''[61] प्रथम वह अध्यापक और कर्मचारियों को भौतिक सुविधाओं का लालच दिखाकर उन्हें धीरे-धीरे नौकरी से निकाल देता है ।

'अन्धेरे के कैदी' कहानी में एक महिला प्रिंसिपल है । वह भी राजनीति में माहिर है । महाविद्यालय में कुछ अध्यापिका हड़ताल करने का निश्चय करती है । यह हड़ताल शायद अपने विरूद्ध होगा यह जानकर वह दो अध्यापिकाओं को अपने केबिन में बुलाती है । ''आप इसमें हिस्सा नहीं लेंगी ... मैडम रीता - आप पार्ट टाइम पर हैं, स्ट्राइक के बाद आपको फुल टाइम पर ले लिया जायेगा । मैडम कालड़ा - आप प्रोबेशन पर हैं, कुछ दिनों बाद ही आप परमनैंट हो सकती है ।''[62] वह पार्ट टाईम और परमनैंट नौकरी का लालच दिखाकर उनको हड़ताल से दूर रखने में सफल होती है ।

'गोकुल' कहानी का प्रिंसिपल पक्का राजनीतिज्ञ है । वह छात्र-युनियन, सरकारी, नगरपालिका, विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ-साथ स्थानीय मंत्रियों के साथ अपने व्यक्तिगत संबंध रखता है । अपनी पत्नी की इच्छानुसार उसके एक फोन पर सरकारी ठाण में बंधी एक गाय उसके बँगले पर पहुँच जाती है । पशुधन अधिकारी की लड़की मैरिट लिस्ट में आना चाहती है इसलिए गाय बँगले पर पहुँच जाती है । गाय घर में पहुँचने के बाद प्रिंसिपल मिश्र नगरपालिका के प्रशासक गुप्ता से कहता है, ''गुप्ता जी, आज अपने हाथ से एक शुभ काम कर दीजिएगा । ... सामने वाले मैदान में उस खिरनी से दूर, ... वहाँ भूमि-पूजन करके खूँटा गाड़ दीजिए ... जर्मन सरकार की मैं सरकार का, आप भी सरकार के । जिस दिन तबादला हो ... तब तक यह वहाँ बँधी चरती रहेगी ।''[63] प्रिंसिपल मिश्र पक्का राजनीतिज्ञ होने के कारण गाय को सरकारी जमीन पर सरकारी अधिकारी से ही बँधवाता है ।

3.3.2 भ्रष्टाचारी प्राचार्य :

शिक्षा जगत में भ्रष्टाचार एक आम बात बन गई है । 'अन्धेरे के कैदी' कहानी का प्रिंसिपल भ्रष्टाचारी है । गोरखा रवि बहादुर रिशी से कहता है ''रमा से पचहत्तर किए थे, दे रही है पचास । संगीत आचार्य से दो सौ किया था, दे रही है डेढ़ सौ ।''[64] अर्थात वह रमा से पचहत्तर रूपये और संगीत आचार्य को दो सौ रूपये वेतन देने का वादा करती है । किंतु उन्हें पूरा वेतन नहीं देती ।

'आलू की आँख' कहानी का प्राचार्य भ्रष्टाचारी है । जीवविज्ञान की प्रयोगशाला में केवल चार ही डिसेक्शन ट्रे हैं । वहाँ न क्लोराफार्म है न मेंढ़क । मेंढ़क न होने के कारण छात्रों ने एक भी मेंढ़क काटा नहीं है । जीवविज्ञान का अध्यापक कई बार प्राचार्य से प्रयोगशाला के लिए आवश्यक चीजें मँगवाने की प्रार्थना करता है । यादव जीवविज्ञान के अध्यापक से कहता है ''तुम उसे बता दो, उसे कितना हिस्सा मिलेगा, वह

---

61. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 31
62. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 47
63. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 67
64. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 46

आज ही मँगा देगा ।''[65] विद्यालय में आवश्यक सामान प्राचार्य की अनुमति बिना नहीं खरीदा जा सकता । अत: ऐसे अनेक प्राचार्य हैं जो बिना कमीशन के सामान खरीदने के लिए तैयार नहीं होते ।

3.3.3 संपत्ति प्रेमी प्राचार्य :

आज मनुष्य आवश्यकता से अधिक धन कमाते हुआ नजर आता है । आवश्यकता से अधिक धन दु:ख का कारण बनती है । पूर्णसिंह के अनुसार ''धन एकत्र करना तो मनुष्य जाति के आनंद-मंगल का एक साधारण-सा और महातुच्छ उपाय है ।'' [66] अपने व्यक्तिगत आनंद - मंगल के लिए 'गोकुल' कहानी का प्राचार्य डॉ. बालकृष्ण मिश्रा महातुच्छ उपाय को अपनाता है । संपत्ति के लालच में डॉ. मिश्रा अपनी पत्नी से तुच्छ काम करवाता है । प्राचार्य स्थानीय मंत्री के माध्यम से बँगले के सामने वाली जमीन हड़पना चाहता है । इसलिए मंत्री को पटाने के लिए ''मिसरानी ने अपनी चोली में हाथ डाला और गहरे सिंदूर में सुते हुए लाल डोरे में गँठा हुआ तावीज निकाला ... मंत्रीजी की जाकेट के बटन खोले ... उनके खुले सीने पर स्वस्तिक बनाकर अपना शरीर बिल्कुल मन्त्रीजी से सटाते हुए ताबीज मंत्रीजी के गले में डाल दिया ।''[67] इस प्रकार एक प्राचार्य केवल संपत्ति के लिए अपनी इज्जत दाँव पर लगाता है । वह संपत्ति प्राप्ति के लिए अनीति को ही नीति मानता है ।

'आलू की आँख' कहानी का प्राचार्य भी संपत्ति प्रेमी है । वह एक विद्यालय का प्राचार्य है और मिडिल स्कूल का हेड़मास्टर भी । उसे हेडमास्टरी के लिए अलग से साठ रूपये भत्ता मिलता है । कहानीकार के शब्दों में ''उन्हें पैसा मिले तो वे पूरे राष्ट्र की शिक्षा का भार अपने कन्धों पर उठा लेते ।''[68] प्राचार्य केवल पैसों के लिए अतिरिक्त काम करता है । वह पैसों के लालच में अपने कर्तव्य के प्रति सजग नहीं रहता ।

3.3.4 संवेदनहीन प्राचार्य :

'अन्धेरे के कैदी' कहानी की प्रिंसिपल संवेदनहीन है । उसका अपने कर्मचारियों के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार नहीं है । एक वयस्क चपरासीन कर्तारी प्रिंसिपल की लड़की बेबो के लिए टॉफियाँ लाने उसके साथ जाना चाहती है । कर्तारी बेबी के प्रेम की खातिर प्रिंसिपल केबिन में बिना बुलाए चली जाती है । प्रिंसिपल कर्तारी से कहती है ''जब तुम्हें बुलाया नहीं गया, तुम दफ्तर में आई कैसे ? गेट आऊट !''[69] यह सुनकर कर्तारी की आँखों में आसू आते हैं । उसका प्रत्येक कर्मचारी के साथ ऐसा ही व्यवहार है । वह कर्मचारियों की वय और भावनाओं की कदर नहीं करती । एक प्रशासक को अपने सहयोगियों के साथ किस प्रकार व्यवहार करना है इससे वह अपरिचित है ।

---

65. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 106
66. (संपा) सुदर्शन नजीठिया - ग्यारह निबंध, पृ. 38
67. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 69
68. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 107
69. (संपा गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 41

'उपनिवेश' कहानी का प्रिंसिपल भी कठोर है । वह भी अपने अध्यापक और कर्मचारियों के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार नहीं करता । वह उनकी समस्याओं को, भावनाओं को महसूस नहीं करता । अध्यापक अशोक वर्मा बहनोई की मृत्यु के कारण एक दिन विद्यालय में उपस्थित नहीं रह पाता । प्रिंसिपल अशोक से कहता है "अच्छा हो, मि. वर्मा आप पूरे सेशन-भर अपनी बहन के साथ रहे । उनका काम ठीक-ठाक कर दें । आपकी जगह जिसे हमने रखा है, उसे पूरे सेशन-भर पढ़ाने के लिए कह दिया है ।"[70]

3.3.5 तानाशाह प्राचार्य :

'प्रिंसिपल' कहानी का प्रिंसिपल नारंग तानाशाह है । वह अपने विद्यालय में हिटलर, टोजो और मुसोलिनी जैसी शासन-व्यवस्था लाना चाहता है । उसमें प्रशासकीय कुशलता नहीं है । वह किसी के साथ विचार - विमर्श नहीं करता । छात्रों को बिना वजह पिटता है । "मैं कुछ सहन नहीं कर सकता । क्षमा नाम का शब्द मेरी डिक्शनरी में नहीं ।"[71] अगर ऐसे प्रिंसिपलों के हाथ में प्रशासन की बागडौर रही तो विद्यालय की निश्चित ही अधोगति होगी ।

3.3.6 जातीयवादी प्राचार्य :

प्रिंसिपल का व्यवहार न्यायाधिश की भाँति होना चाहिए । उसके व्यवहार में समानता होनी चाहिए । वह जातीयवादी तो बिल्कुल ही नहीं होना चाहिए । किंतु 'आलू की आँख' कहानी का प्रिंसिपल जातीयवादी है । वह एक अध्यापक से पूछता है - "आप तो ब्राह्मण है ... नागर या सरयूपारी ?"[72] जातीयवाद को नष्ट करने की जिम्मेदारी सबसे अधिक शिक्षा पर है । लेकिन कहानीकार ने इस ओर संकेत किया है कि जातीयवाद के बीज शिक्षा जगत में ही बोये जाते हैं । आज प्रत्येक जाती के अलग अलग विद्यालय दिखाई देते हैं । वहाँ केवल जातीयता के आधार पर ही छात्रों को प्रवेश दिया जाता है । "सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एस. राजेंद्र बाबू व न्यायमूर्ति रूमा पाल के खंडपीठ के अनुसार संविधान की धारा 30(1) अनुसार किसी भी भाषिक अथवा धार्मिक अल्पसंख्य व्यक्ति या संस्था को अल्पसंख्यांको के लिए शैक्षणिक संस्था स्थापित करने का अधिकार है ।" ("सर्वोच्च न्यायालयाचे न्यायमूर्ति एस. राजेंद्र बाबू व न्या. रूमा पाल यांच्या खंडपीठाने 30 (1) द्वारे कोणत्याही भाषा अथवा धर्माच्या अल्पसंख्य समाजातील व्यक्ति तसेच संस्थेला अल्पसंख्याकांसाठी शैक्षणिक संस्था सुरू करण्याचा व चालवण्याचा अधिकार आहे.")[73] न्यायालय के इस फैसले से जातीय शिक्षा संस्थाओं की वृद्धि होगी इसमें संदेह नहीं ।

---

70 . (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 33

71. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 27

72. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 102

73. (संपा) भारतकुमार राऊत - महाराष्ट्र टाइम्स दि. 1 फेब्रुवारी, 2002, पृ. 1

3.3.7 निंदक प्राचार्य :

'आलू की आँख' कहानी का हेडमास्टर निंदक है । विद्यालय में अध्यापकों के तीन गुट है । हेडमास्टर जीव्विज्ञान के नए अध्यापक को अपने गुट में शामिल करना चाहता है । वह अन्य गुटों के अध्यापकों की निंदा करते हुए कहता है ''इन लोगों ने सारा माहौल गन्दा कर रखा है । एक यादव है, लड़कों को सिर चढ़ा रखा है, और त्रिपाठी महाकौशल के है तो समझते हैं डी. एस. ई. जैसे उनकी जेब में हैं । महाकौशल वाले वैसे भी होते ही उजड्ड हैं ।''[74] हेडमास्टर द्वारा एक अध्यापक की निंदा दूसरे अध्यापक के सामने करना उचित नहीं है । इससे अध्यापकों में संघर्ष हो सकता है । इस संघर्ष का छात्रों पर निश्चित ही परिणाम होता है । अत: छात्रों में भी गुटबाजी होने की संभावना हो सकती है ।

3.3.8 कमजोर प्राचार्य :

अध्यापकों की कमजोरी का फायदा छात्र उठाते हैं । प्रिंसिपल या हेडमास्टर की कमजोरी का फायदा अध्यापक और छात्र दोनों उठाते हैं । 'इसी शहर में' कहानी का प्रिंसिपल कमजोर है । छात्र अपनी कुछ माँगों के लिए हड़ताल करते हैं । वे प्रिंसिपल की गाड़ी को घेर लेते हैं । प्रिंसिपल गाड़ीसे उतरकर लड़कों का जोश देखकर घबरा जाता है । ''एक बार पीछे मुड़कर फिर गाड़ी में बैठ जाने की सोची ... ।''[75] प्रिंसिपल हड़ताल कर्ताओं से भले लड़कों की तरह गेट से हट जाने को कहकर उनसे समझौता करना चाहता है । उसकी इसी कमजोरी का छात्र फायदा उठाते हैं । कालेज के गेट के बाहर फल बेचने वाली बुढ़िया प्रिंसिपल की गाड़ी से टकराकर जमीन पर गिरते देखकर और घबरा जाता है । वह घबराकर कहता है ''चलो-चलो, भागो-भागो ।''[76] कहानीकार के शब्दों में ''वे समझ रहे थे कि अब उनका यहाँ खड़े रहना क्या अर्थ रखता है और क्या रंग ला सकता है ।''[77] ऐसे कमजोर प्रिंसिपल के नेतृत्व में महाविद्यालयों की उन्नति संभव नहीं है । मेरे विचार से ऐसे प्रिंसिपलों पर शिक्षा की जिम्मेदारी सौंपना खतरे से खाली नहीं ।

3.3.9 अध्यापकों को निरूत्साह करनेवाला प्राचार्य :

'आलू की आँख' कहानी का हेडमास्टर अध्यापकों को निरूत्साह करता है । जीवविज्ञान का अध्यापक छात्रों से बागवानी करवाना चाहता है । वह बागवानी के लिए हेडमास्टर से फावड़े-गेंती की माँग करता है । हेडमास्टर कहता है ''क्यों चक्कर में पड़ते हैं आप, थोड़ा-बहुत किताब से पढ़ा दीजिएगा, बागवान की कौन देख-रेख करेगा, ... खाद-पानी की सौ चकल्लसें हैं ।''[78]

---

74. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 105
75. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 148
76. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 151
77. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 149
78. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 108

'प्रिंसिपल' कहानी का प्रिंसिपल भी अध्यापकों को निरूत्साह करता है । प्रिंसिपल और प्रबंधक दोनों की मिलिभगत होने के कारण वे दोनों भी अध्यापकों की ओर ध्यान नहीं देते । विद्यालय में अध्यापकों और छात्रों की मेहनत से सायन्स प्रदर्शनी का सफल आयोजन होता है । ''हम प्रतीक्षा में कि प्रिंसिपल सिर हिलाये । जुबान खोले, काम पूरा होने का सर्टिफिकेट दे ।'' [79] प्रिंसिपल को चाहिए कि वे अध्यापकों की स्तुति करें, उनके कार्य की प्रशंसा करें , स्तुति तथा प्रशंसा से अध्यापकों में उत्साह निर्माण होता है । उनके पाठ्येतर कार्य को गति मिलती है । मुख्याध्यापक के प्रशंसोद्गार से विद्यालय और छात्रों को लाभ होता है । प्रा. वा. ना. दांडेकर के अनुसार ''अन्य किसी भी व्यवसाय की अपेक्षा अध्यापकीय पेशे में अध्यापक के व्यक्तिगत मानसिक स्वस्थ को अधिक महत्त्व देना चाहिए ।'' (इतर कोणत्याही व्यवसायापेक्षा शिक्षकी पेशामध्ये शिक्षकाच्या व्यक्तिगत मानसिक आरोग्यास अधिक महत्त्व दिले पाहिजे.)[80] 'आलू की आँख' और 'प्रिंसिपल' कहानी के मुख्याध्यापक भी अध्यापकों की मानसिक स्वास्थ की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देते ।

3.3.10 अध्यापकों की पदोन्नति में रूकावट डालनेवाला प्राचार्य :

पदोन्नति से अध्यापकों का उत्साह द्विगुणीत होता है । वेतन में वृद्धि होती है । मान-सम्मान बढ़ता है । 'प्रिंसिपल' कहानी का प्रिंसिपल अध्यापकों की पदोन्नति में रूकावट डालने वाला है । वह जान-बुझकर अध्यापकों की पदोन्नति के कागजात शिक्षा-अधिकारी के पास नहीं भेजता । प्रिंसिपल एक प्रशासक होता है । अत: प्रशासक की जिम्मेदारी होती है कि वह सरकारी नियमों के अनुसार कार्यालय के कागजातों की पूर्ति संबंधित कार्यालय को करें । अध्यापक अपनी पदोन्नति के संदर्भ में प्रबंधक और शिक्षा-अधिकारी से मिलते हैं । शिक्षा-अधिकारी अध्यापकों को कई दिन टालने के बाद कहता है ''पहल प्रिंसिपल और प्रबंधक को करनी है । जब तक वे फाईल हमारे पास नहीं भेजते, हम कुछ नहीं कर सकते ।''[81] अध्यापकों के आर्थिक नुकसान के लिए प्रिंसिपल ही जिम्मेदार है । प्रिंसिपल के ऐसे व्यवहार के कारण अध्यापकों की अधिकतर शक्ति अपने निजी काम करने में ही खर्च होती है । परिणामत: अध्यापन की ओर दुर्लक्ष होता है ।

3.3.11 चापलूस प्राचार्य :

'प्रिंसिपल' कहानी का प्रिंसिपल चापलूस है । वह स्कूल का कम्पाउंड शादी-ब्याह के लिए किराये पर देता है । वह शादी-ब्याह में कोई बड़ा आदमी आ जाता तो उसके आगे-पीछे घूमता रहता है । एक बार गवर्नर किसी दोस्त की बेटी की शादी पर पधारे थे । दूसरे दिन विद्यालय में अध्यापकों और विद्यार्थियों के सामने गवर्नर के साथ अपनी मुलाकात का बखान करने लगता है । ''अब मैं शिक्षा-निदेशक के साथ बात करते समय गवर्नर के साथ अपने संबंध का हवाला दे सकता हूँ । शिक्षा-विभाग का कोई अधिकारी मेरे कहे को नहीं

---

79. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 22
80. प्रा. वा. ना. दांडेकर - शैक्षणिक व प्रायोगिक मानसशास्त्र, पृ. 332
81. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 25

मोड़ सकता ।''[82] प्रिंसिपल यह भूल गया कि वह प्रथम अध्यापक है । उसे बड़े लोगों के आगे - पीछे घूमना शोभा नहीं देता । पुष्पा दीवान के शब्दों में ''... अध्यापक को कर्तव्यनिष्ठ और साहसी होने के साथ-साथ पूर्ण स्वाभिमानी भी होना चाहिए ।''[83] प्रिंसिपल बड़े लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करने से वह स्वाभिमान और कर्तव्य से दूर चला जाता है । ऐसा व्यवहार छात्रों पर बुरा असर डालता है । कर्तव्यनिष्ठ और स्वाभिमानी अध्यापक या प्रिंसिपल ही समाज में सम्मान के पात्र बनते हैं । कहानीकार ने छात्रों को संकेत दिया है कि वे ऐसे प्रिंसिपल के व्यवहार का अनुकरण न करें ।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि विवेच्य कहानियों के मुख्याध्यापक एवं प्राचार्य आदर्श से बहुत दूर जा चुके हैं । किसी भी कहानीकार ने आदर्श प्रशासक का चित्रण नहीं किया है । विवेच्य कहानियों के सभी मुख्याध्यापक अध्यापक के मूल कर्तव्य को भूल चुके हैं । मुख्याध्यापकों का अधिकतर संबंध राजनीतिज्ञों से आता है । इसलिए वे राजनीति से प्रभावित दिखाई देते हैं । वे राजनीति का दुरूपयोग अपनी ही शिक्षा संस्थाओं में करते दिखाई देते हैं । वे राजनीति को भ्रष्टाचार का साधन मानते हैं । वे राजनीति के कारण ही संवेदनहीन एवं कठोर बन चुके हैं । ऐसे प्रशासकों के कारण ही शिक्षा के पवित्र उद्देश्यों में सफलता नहीं मिल रही है ।

3.4 कुलपति से संबंधित व्यक्त यथार्थ :

कुलपति विश्वविद्यालय का सर्वोच्च अधिकारी होता है । अनुभव, शैक्षणिक योग्यता आदि के आधारपर कुलाधिपति द्वारा कुलपति की नियुक्ति की जाती है । विश्वविद्यालय के प्रगति की बागडौर कुलपति के हाथों में होती है । अत: एक आदर्श कुलपति में नेतृत्व, अध्यापन कौशल्य, नियोजन क्षमता, निर्णय क्षमता, आत्मविश्वास, अविष्कार कुशलता, सहानुभूति एवं सामाजिक संपर्क आदि गुणों की आवश्यकता होती है ।

विवेच्य कहानियों में कुलपति एवं उपकुलपति से संबंधित व्यक्त यथार्थ इस प्रकार है -

3.4.1 विवेकहीन कुलपति :

हिंदी शब्द सागर के अनुसार 'विवेक' शब्द का अर्थ है ''मन की वह शक्ति जिसमें भले बुरे का ज्ञान होता है ।''[84] 'कोलाहल' कहानी का कुलपति विवेकहीन है । छात्र नेता दिवाकर अपनी अनुचित माँगों को लेकर कुलपति के पास जाता है । वह कुलपति से हवा में मुक्का उछालकर कहता है ''मैं कुछ नहीं सुनना चाहता । हम अपनी माँगें आपके सामने रख चुके हैं । यदि आप उन्हें सेंट-परसेंट नहीं स्वीकार करते तो याद रखिए हम ...''[85] कुलपति दिवाकर के इस वक्तव्य पर अपनी कुछ भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता ।

---

82. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 24
83. (संपा) रवींद्र अग्निहोत्री - चिंतन अनुचिंतन, पृ. 17
84. (संपा) श्यामसुंदरदास - हिंदी शब्द सागर, पृ. 4538
85. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 62

कहानीकार कहता है ''वी. सी. ने पल भर के लिए दृष्टि उठायी - वह खामोशी की पोती दृष्टि ।... वी. सी. ने पेन निकाला. दस्तखत कर दिये, फाईल दिवाकर के हाथ में देते हुए कहा 'प्लीज टेक इट' ।''[86] कुलपति को यहाँ विवेक से काम लेना चाहिए था । उनकी माँगों पर विचार-विमर्श करना चाहिए था । लेकिन कुलपति इनमें कुछ न कर उनकी माँगें सहज स्वीकार करता है । बी. के. आर. वी राव के अनुसार ''हमारे विश्वविद्यालयों के कर्ताधर्ता अपने स्नातकों में भारतीय अभिन्नता, सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय एकता की भावना का तथा कर्मणा दोनों प्रकार से संचार करने में बहुत कुछ सहायता कर सकते हैं ।'' [87] 'कोलाहल' कहानी का विवेकहीन कुलपति स्नातकों में सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय एकता की भावना का संचार नहीं कर सकता ।

3.4.2 राजनीतिज्ञ कुलपति :

'परथम श्रेणी सबको दो' कहानी का उपकुलपति राजनीतिज्ञ है । सदाप्रथमसिंह प्रथम श्रेणी के संदर्भ में उपकुलपति से मिलता है । वह उनसे कहता है कि चार छात्रों ने परीक्षा में भ्रष्टाचार किया है । अत: केवल इन चारों के कारण ही हम प्रथम श्रेणी से वंचित हुए है । उपकुलपति सदाप्रथम सिंह को प्रथम श्रेणी पाने के लिए आंदोलन तीव्र करने का सुझाव देता है । वह राजनीति के दाँव-पेंच बताते हुए कहता है ''आप देश के भावी कर्णधार है, आपको भी तरीका बताना पड़ेगा ? समता और समाजवाद का युग है, यह बात किसी भी आन्दोलन को चलाते समय ध्यान में रखनी चाहिए ।''[88] उपकुलपति के इतने सुझाव से सदाप्रथमसिंह आंदोलन को तीव्र कर प्रथम श्रेणी पा लेता है । राजनीति के संदर्भ में पवन चौधरी कहते हैं ''सामान्यत: सभी सरकारी आफिसर, विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और न्यायालयों के न्यायमूर्ति पहले राजनीतिज्ञ दिखाई पड़ते हैं, फिर आफिसर, प्रोफेसर और न्यायमूर्ति ।''[89] पवन चौधरी के इस कथन को नकारा नहीं जा सकता । उक्त कहानी का उपकुलपति प्रथम राजनीतिज्ञ है बाद में उपकुलपति । शिक्षा-जगत में ऐसे कुलपति, उपकुलपति पाये जाते हैं जो कुछ निर्णय छात्रनेताओं के अनुकूल करते हैं । वे छात्रनेताओं के अनुकूल निर्णय कर उनको अपनी जेब में रखते हैं । ताकि भविष्य में वे उनकी अनैतिक कार्य में हस्तक्षेप न करें ।

3.4.3 अध्यापकों की सहायता करनेवाला कुलपति :

भ्रष्ट राजनीति के कारण ही कुछ अध्यापकों को मानसिक कष्ट उठाने पड़ते हैं । 'संदर्भ' कहानी में प्रोफेसर धीरेंद्र विभागाध्यक्ष श्री बत्रा के कारण मानसिक कष्ट उठाता है । श्री बत्रा विभाग के कुछ छात्रों की सहायता से प्रो. धीरेंद्र को विभाग से बाहर फेंकने की कोशिश करता है । शुभ्रा वी. सी.(Vice Chancellor) से विभाग की गतिविधियों की शिकायत करती है । वी. सी. नए अध्यापकों की समस्याओं से और श्री बत्रा की राजनीति से भलि-भाँति परिचित है । वह प्रो. धीरेंद्र से धीरज बाँधते हुए कहता है ''...

---

86. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 63
87. (अनुवादक) बद्रीदत्त पांडे - शिक्षा और जन-साधन, पृ. 98
88. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 96
89. पवन चौधरी - मनमौजी उवाच, पृ. 155

बताइए, व्हाट कैन आई डू फॉर यू ।... आप यदि किसी की रिपोर्ट करें तो मैं उसे देखूँगा ।''[90] वी. वी. के इस कथन से स्पष्ट होता है कि वह अध्यापकों की समस्याओं को जानकर उनकी मदद करने वाला है । वह एक सफल प्रशासक भी दिखाई देता है । विश्व ज्ञान संहिता के अनुसार ''... मानव तत्त्व की अवहेलना करने पर ... केवल तकनीकी ज्ञान से पूर्ण प्रशासन कभी सफल नहीं हो सकता ...''[91] अर्थात उक्त कहानी का वी. सी. प्रो. धीरेंद्र की अवहेलना न कर उसे विभागाध्यक्ष श्री बत्रा की राजनीति से छूटकारा दिलाता है । अर्थात यह सफल प्रशासक के लक्षण है ।

निष्कर्ष :

कहानीकारों ने केवल तीन कहानियों में कुलपति और उपकुलपति के चरित्र पर प्रकाश डाला है । यह चित्रण संक्षिप्त होते हुए भी शिक्षा-जगत के उच्च पदाधिकारियों के चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन करने के लिए पर्याप्त है । 'परथम श्रेणी सबको दो' और 'कोलाहल' कहानी में कुलपति एवं उपकुलपति की भ्रष्ट राजनीति पर प्रकाश डाला गया है । 'संदर्भ' कहानी में वी. सी. को सफल प्रशासक के रूप में चित्रित कर विश्वविद्‌यालयीन शिक्षा-जगत में आशा की किरण दिखाई है ।

3.5 कर्मचारियों से संबंधित व्यक्त यथार्थ :

शिक्षा-जगत में अध्यापक, मुख्याध्यापक, विद्‌यार्थियों के साथ-साथ कर्मचारियों का भी विशेष महत्त्व होता है । इन पर शिक्षा जगत का व्यवस्थापन निर्भर होता है । कार्यालय या विद्‌यालय की साफ-सफाई, पत्रव्यवहार, समारोह की व्यवस्था, समय पर विद्‌यालय खोलना, बंद करना, सूचना फिराना, कागजातों की देखभाल करना, पुस्तकों की लेन-देन, पुस्तकों की खरीदी, प्रयोगशाला में साधनों की पूर्ति और साफ सफाई करना, समय सारणी के अनुसार घंटी बजाना आदि कार्यों के लिए कर्मचारियों की आवश्यकता होती है ।

'शिक्षा जगत की कहानियां' में कर्मचारियों का चित्रण निम्नांकित रूप में किया है -

3.5.1 कामचोर कर्मचारी :

'कामचोर' प्रवृत्ति के कारण ही देश के विकास में बाधा उत्पन्न हो रही है । आज कोई भी क्षेत्र इस प्रवृत्ति से अछूता नहीं है । यह प्रवृत्ति अधिकतर सरकारी कर्मचारियों में पायी जाती है । 'दीक्षा गाथा' कहानी में प्रधानाचार्य एक चपरासी से कुर्सी लाने के लिए कहता है । ''मंगू ने खचेडू को, खचेडू ने फूडेसिंग को और फूडेसिंग ने कल्लू को कुर्सी लाने का आदेश दिया और शान्ति के साथ अपने स्थान पर खड़े रहे ।''[92] इस उद्‌धरण से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक चपरासी अपने आपको बॉस समझता है । वह अपने कर्तव्य से दूर भागकर केवल वेतनभोगी बना है ।

---

90. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 123
91. (संपा) सत्यनारायण मोटूरि - विश्व ज्ञान संहिता, पृ. 683
92. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियाँ, पृ. 197

'पुस्तकालय प्रसंग' कहानी में भी लायब्रेरियन कामचोर दिखाई देता है । अध्यापक मंगतूराम ग्रंथपाल को ग्रंथालय की टूटी कुर्सियाँ बदलने की केवल सूचना देता है । लाइब्रेरियन अध्यापक मंगतूराम से कहता है ''मैं लायब्रेरियन हूँ, मेरा काम पुस्तकालय देखना है, कुर्सियाँ देखना नहीं ।'' [93] प्रस्तुत उद्धरण से ज्ञात होता है कि ग्रंथालय का कर्मचारी भी अपने काम को छोड़कर अन्य काम नहीं करना चाहता । प्राय: कार्यालयों में यह देखा जाता है कि एक विभाग के कर्मचारी दूसरे विभाग के कर्मचारियों की सहायता नहीं करते । सरकारी कार्यालयों में एक टेबल की फाइल दूसरे टेबल तक पहुँचाने के लिए कर्मचारियों को रिश्वत देनी पड़ती है ।

3.5.2 लाचार कर्मचारी :

'अन्धेरे के कैदी' कहानी का वृद्ध बाबूजी अपनी पारिवारिक समस्या के कारण लाचार बना है । वह रिटायरमैंट के बाद भी नौकरी करता है । उसका स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण वह समय पर कार्यालय में नहीं पहुँच जाता । प्रिंसिपल के बुलाने पर महीन स्वर में कहता है ''जी कहिए ।'' [94] प्रिंसिपल द्वारा समय पर न आने का कारण पूछने पर कहता है ''जी अस्पताल गया था, दवा लेने ।''[95] जब प्रिंसिपल वृद्ध बाबूजी से रिशी को फाइल देने को कहती है तब बाबूजी कहता है ''अभी, लीजिए, अभी ...''[96] वृद्ध बाबूजी के 'जी' से ज्ञात होता है कि उसे नौकरी छूटने का डर है । वह बुजुर्ग होते हुए भी उसे प्रिंसिपल की डाँट खानी पड़ती है । रिशी जब नौकरी छोड़कर चला जाता है तब बाबूजी उसे कहता है ''रिशी, नौकरी पाना खेल नहीं है । रूक जाओ । बैठकर आराम से सोचो-विचारो ।''[97] बाबूजी रिशी को केवल नौकरी के लिए लाचार बनाना चाहता है । वह उसे स्वाभिमान से जीना नहीं सिखाता ।

3.5.3 कमीशन खानेवाला कर्मचारी :

'पुस्तकालय प्रसंग' कहानी का ग्रंथपाल पुस्तकों की खरीदी में कमीशन खाता है । वह ड्यूटी पर ग्रंथालय में सोता है । ''स्वप्न में लायब्रेरियन साहब पुस्तकों की खरीद में अपने कमीशन के विषय में विक्रेता से तर्क कर रहे थे ।''[98] इस उद्धरण से ज्ञात होता है कि कमीशन खाने की प्रवृत्ति उपर से नीचे तक आ पहुँची है । जब हमारे देश में बोफोर्स, चारा घोटाला जैसे बड़े-बड़े घोटाले हो रहे हैं तब ग्रंथपाल इससे कैसे अछूता रह सकता है ।

3.5.4 स्वाभिमानी कर्मचारी :

'अन्धेरे के कैदी' कहानी का टायपिस्ट रिशी स्वाभिमानी है । वह स्वतंत्र विचारों वाला है । प्रिंसिपल रिशी के काम से खुश होकर उसे एक महीने का वेतन ढेड़ सौ रूपये देती है । रिशी ढेड़ सौ रूपये को अस्वीकार

---

93. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 14
94. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 40
95. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 40
96. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 40
97. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 48-49
98. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 13

करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहता है ''जी, मुझे यह रकम मंजूर नहीं ।''[99] रिशी के इस स्पष्ट वक्तव्य से प्रिंसिपल उसे नौकरी से निकालने की धमकी देती है । रिशी प्रिंसिपल से कहता है ''... मैं ऐसी नौकरी पर लानत भेजता हूँ । ... मैडम ! आप भी कान खोलकर सुन लीजिए कि मैं भी कोई बलि का बकरा नहीं हूँ ... चैक का रौब किसे झाड़ती है । चैक उठाकर पर्स में रख लीजिए मेरी तरफ से अपनी इकलौती बच्ची के जन्म-दिन के लिए कोई तोहफा लीजिएगा ।''[100] इस उद्धरण से स्पष्ट होता है कि रिशी ही एक ऐसा कर्मचारी है जो अन्याय और शोषण का विरोध करता है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कहानिकारोंने कामचोर, लाचार और कमीशन खानेवाले कर्मचारियों का चित्रण अधिक किया है और स्वाभिमानी कर्मचारियों का कम ।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि शिक्षा के मूल उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए छात्र, अध्यापक, प्रधानाध्यापक, कर्मचारी, शिक्षा-अधिकारी आदि प्रमुख सीढ़ियाँ है । अत: इन सीढ़ियों में से एक भी सीढ़ी कमजोर नहीं होनी चाहिए । आज छात्र समुदाय में असंतोष अधिक पनप रहा है । इस असंतोष का चित्रण विवेच्य कहानियों में किया है । छात्रों में असंतोष के साथ-साथ मानसिक द्वंद्व भी फैल रहा है । मानसिक द्वंद्व के अनेक कारणों में से बेरोजगारी एक प्रमुख कारण है । छात्रों को एक ओर परिवार के सदस्य शिक्षा-प्रणाली, परीक्षा-प्रणाली, फैशन, स्वच्छंदता, विलासिता आदि के कारण कोसते हैं तो दूसरी ओर नेता, शिक्षक, सरकारी अधिकारी छात्रों को नियंत्रण से बाहर मानकर कोसते हैं । राजनीतिज्ञों के साथ-साथ अध्यापक भी अपने स्वार्थ के लिए छात्रों का कटपुतली के समान उपयोग कर रहे हैं । 'परथम श्रेणी सबको दो', 'संदर्भ', 'मदारी' कहानियों में इसका यथार्थ चित्रण किया है । छात्र पारिवारिक और सामाजिक अवहेलना के कारण व्यसनों के चंगुल में फँसे नजर आते हैं । 'दिशाहीन', 'स्कूलगाथा', 'इसी शहर में' कहानियों में व्यसनी छात्रों का चित्रण किया गया है । लेकिन 'कोलाहल', 'संदर्भ', 'राख हो चुका समय' कहानियों में आदर्श एवं विनम्र छात्रों का चित्रण किया है । इन कहानियों के छात्र आज के छात्रों के लिए निश्चित ही प्रेरणादायी एवं मार्गदर्शक सिद्ध होंगे इसमें संदेह नहीं । जैसे शुभ्रा, मणि, पारसनाथ । छात्रों के साथ-साथ अध्यापकों के गुण-दोषों का भी चित्रण किया गया है । अधिकांश कहानियों में अध्यापकों के निगेटिव्ह पक्ष का ही चित्रण किया है । किंतु कहानीकारों ने 'राख हो चुका समय', 'प्रिंसिपल', कहानियों में अध्यापकों के पॉजिटिव्ह पक्ष का चित्रण कर अध्यापक वर्ग पर लगे धब्बे को मिटाने का प्रयास किया है । कहानीकारों ने शिक्षा जगत के पदाधिकारियों जैसे प्रधानाध्यापक, कुलपति, उपकुलपतियों को भी नहीं छोड़ा है । विवेच्य कहानियों में अधिकांश प्रिंसिपल, हेडमास्टर, कुलपति, उपकुलपति भ्रष्टाचारी, राजनीतिज्ञ, संपत्ति प्रेमी, तानाशाह, चापलूस और निंदक है । अत:

---

99. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 48
100. (संपा) गिरिराज शरण - शिक्षा जगत की कहानियां, पृ. 48

यह कहा जा सकता है कि शिक्षा जगत को अंधेरे में रखने के लिए ये लोग ही अधिक जिम्मेदार हैं । ये पदाधिकारी ही अपने अधिकार का दुरूपयोग कर शिक्षा को उलट दिशा में ले जा रहे हैं । इन पदाधिकारियों को सही रास्ते पर लाने के लिए अध्यापकों, छात्रों और कर्मचारियों को संघटित होना आवश्यक है । 'अन्धेरे के कैदी' कहानी का टायपिस्ट रिशी एक मात्र ऐसा कर्मचारी है जो शिक्षा जगत में क्रंतिकारी कदम उठाकर संपूर्ण शिक्षा-व्यवस्था को हिला देता है । अत: कहानीकार ने रिशी के माध्यम से क्रांतिकारी विचार अपनाने का संदेश दिया है ।